इतना मजाक किसी पीएम का नहीं उड़ा होगा

ताली-थाली के बाद अब मोदी का दीया...

जनता को दीया जलाने से क्या मिलेगा...शायद मालूम नहीं

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

नई दिल्ली: लॉकडाउन के दसवें दिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देशवासियों को सुबह 9 बजे संबोधित किया। इस दौरान उन्होंने जनता से अपील की है कि वो इस रविवार को रात 9 बजे घर की बाल्कनी में दीया/टॉर्च/मोमबत्ती जलाएं। पीएम का कहना था इससे एकजुटता का संदेश फैलेगा। लेकिन मोदी के इस संदेश का लोगों ने इतना मजाक बनाया, जितना आजतक किसी प्रधानमंत्री के किसी बयान की फजीहत नहीं हुई थी। लोगों ने मोदी के इस संदेश की जमकर आलोचना की। विपक्ष के नेताओं ने भी इसमें कोई कसर नहीं छोड़ी लेकिन इसमें सबसे ज्यादा बाजी मारी हैदराबाद से एआईएमआईएम के मुखिया असदुद्दीन ओवैसी ने। उन्होंने मोदी से चुनचुन कर सवाल किए। भाजपा के नेता ओवैसी के बयान पर चुप्पी साध गए।

अंधेरी रात में...

ज्यादातर लोगों ने दादा कोंडके के दोहरे अर्थों और नाम वाली फिल्मों को याद करते हुए फौरन प्रतिक्रिया दे दी - मोदी जी ने अंधेरी रात में दिया तेरे हाथ में...यह नारा ट्विटर पर बहुत ज्यादा ट्रेंड हुआ। तमाम लोगों ने इसके पोस्टर बनाकर जारी कर दिए। कुछ लोगों ने लिखा कि मोदी को जब अपने भक्तों को टेस्ट करना होता है तब वो ऐसी हरकते अपने मूर्ख भक्तों से कराते हैं। अगर मोदी इन लोगों से छत पर या पेड़ पर उल्टा लटकने को कहेंगे तो भक्त वो भी करेंगे।

ओवैसी के तीखे सवाल

असदुद्दीन ओवैसी ने ट्विट करते हुए लिखा है कि यह देश इवेंट मैनेजमेंट कंपनी नहीं है। भारत के लोग इंसान हैं जिनके सपने और उम्मीदें भी हैं। 9 मिनट की नौटंकी में हमारी जिंदगी को कम मत करो।

इसके साथ ही ओवैसी ने पीएमओ को टैग करते हुए लिखा है कि हम जानना चाहते थे कि राज्यों को क्या सहायता मिलेगी और गरीबों को क्या राहत मिलेगी। लेकिन इसके बजाय हमें कुछ नया ड्रामा मिला।

ओवैसी ने अपने अगले ट्वीट में लिखा है कि यह ट्यूब-लाइट आइडिया वास्तव में यूनीक था। पूरे भारत में लाखों भूखे, गरीब और बेघर लोग प्रवासियों के रूप में अपने घरों के लिए जा रहे हैं, मैं पूछना चाहता हूं लाइट कहां है। ओवैसी ने आगे पीएमओ से कहा है कि मुझे पता है कि आप केवल पॉजिटिव वाइब्स चाहते हैं और कुछ मुद्दों को उठाना नहीं चाहते हैं, लेकिन लाइट कहां है?

अपने तीसरे ट्वीट में ओवैसी ने लिखा है कि सुप्रीम कोर्ट में आपके वकीलों का कहना है कि इन प्रवासियों में से एक तिहाई शायद संक्रमण ले जा रहे हों जबकि आपका स्वास्थ्य मंत्रालय कहता है कि भारत में कम्युनिटी ट्रांसमिशन का कोई प्रमाण नहीं है। लाइट कहां है, पीएमओ।

अपने चौथे ट्वीट में ओवैसी लिखते हैं कि एक अनियोजित लॉकडाउन का मतलब गरीबों का अधिक से अधिक कष्ट सहना है। आपने उन्हें अमीरों के दान और राज्यों की सीमित आर्थिक क्षमताओं के सहारे छोड़ दिया है। जब सीएम आपसे वित्तीय राहत मांगते हैं, तो आप उनसे अपनी लाइट बंद करने को कहते हैं?

अपने पांचवे ट्वीट में ओवैसी ने लिखा है कि अंधकारमय बैंकिंग क्षेत्र के बारे में पीएमओ का क्या कहना है? हमारी बढ़ती एनपीए समस्या दूर नहीं हो रही है। आपका कोरोना संकट से पूर्व का आर्थिक संकट अब एक आसन्न वित्तीय आपदा बन जाएगी। हमारी बचत का क्या होगा? बैंकों का क्या होगा?

अपने अंतिम और छठवें ट्वीट में ओवैसी ने लिखा है कि अपने लाखों, करोड़ों के 'राहत' पर कुछ लाइट डालें। इससे भारत के 90 प्रतिशत मजदूरों को फायदा होगा जो असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं।

बता दें कि इससे पहले प्रधानमंत्री ने ताली-थाली भी बजवाई थी और इसके बाद लाइट जलवा रहे हैं। इसी पर एक यूजर ने मजे लेते हुए लिखा है कि अबकी बार सभी घरों की दीवारों पर लिखा जाएगा 'ओ कोरोना कल आना'। शायद इसी से कोरोना भाग जाए।

बिहार में यादव बंधुओं का हमला

बिहार से जहां पीएम के संबोधन के बाद वहां ट्वीट वॉर शुरु हो गया। लालू के लाल तेजप्रताप ने पीएम की दीया, मोमबत्ती, या मोबाइल टॉर्च जलाने पर चुटकी लेते हुए ट्वीट किया कि आप चाहें तो लालटेन भी जला सकते हैं।

इस पर पलटवार करते हुए बिहार के डिप्टी सीएम सुशील मोदी ने कहा कि लालटेन का जमाना चला गया। मोबाइल तो सबके पास है इसलिए पीएम ने लालटेन का जिक्र नहीं किया, समझे बबुआ।

अबकी बारी तेजप्रताप यादव की थी। उन्होंने लिखा, 'हल्की सी हवा में भी लालटेन को देखकर मोमबत्ती अन्धकार मिटाने का कार्य बंद कर देती है बल्कि गहनतम अन्धकार में भी टिमटिमाती हुई लालटेन भुले-भटके राहगीरों का मार्गदर्शन कराती आई है। समझे चच्चा।

शिवसेना भी पीछे नहीं

शिवसेना के भीष्म पितामह यानि संजय राउत ने कहा कि जब लोगों को ताली बजाने के लिए कहा गया तो उन्होंने सड़कों पर भीड़ लगाई और ड्रमों को पीटा। इस बार मुझे उम्मीद है कि अब वे अपने घरों को नहीं जलाएंगे। सर (पीएम) दीया तो जलाएंगे लेकिन कृपया हमें बताएं कि सरकार हालत सुधारने के लिए क्या कर रही है? इसी तरह उद्धव ठाकरे मंत्रिमंडल के महत्वपूर्ण मंत्री जितेंद्र चव्हाण ने कहा कि वे रविवार को दीया या मोमबत्ती नहीं जलाएंगे। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री असली मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए इस तरह का नाटक कर रहे हैं। मंत्री ने कहा कि जब मोदी को जनता की परेशानियों का निदान करना चाहिए वे फिजूल के इवेंट में लगे हुए हैं।

फराह खान का तीखा बयान

पीएम मोदी के इस वीडियो मैसेज के बाद फराह खान अली ने तीखी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने ट्विटर पर लिखा है कि लोगों ने तालियां बजाईं, घंटियां बजाईं, थालियां बजाईं और यहां तक कि पीएम केयर फंड में दान भी दिया और अब 5 अप्रैल को वह मोमबत्तियां भी जलाएंगे। क्या अब सरकार एक अच्छे अर्थशास्त्री को नियुक्त कर सकती है जो इस देश को आर्थिक तबाही से बचाने के लिए एक वास्तविक उपाय कर सके अन्यथा हम बर्बाद हो जाएंगे।

मालूम हो कि जूलरी डिजाइनर फराह खान अली बॉलीवुड के मशहूर एक्टर संजय खान की बेटी हैं,जो कि सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय रहती हैं, इससे पहले भी वो मोदी सरकार के कामों पर कई बार सवाल कर चुकी हैं।

पुलिस का व्यवहार : केवल एक ऑडियो ने सोसायटी वासियों को परेशान किया

फ़रीदाबाद (म.मो.) सदैव जनता के निशाने पर रहने वाली एवं हर तरह की आलोचना झेलने वाली पुलिस इस लॉक-डाउन में अपनी सराहनीय भूमिका निभाने के चलते जनता से अच्छी-खासी प्रशंसा पा रही है। पुलिस की सबसे कड़ी एवं तीखी आलोचना करने के लिये विख्यात **'मज़दूर मोर्चा'** ने शहर के विभिन्न भागों से तमाम तरह की जानकारियां जुटाई, लेकिन कहीं से भी पुलिस के विरुद्ध कोई शिकायत नहीं मिली। जवाहर कॉलोनी, पर्वतीया कॉलोनी जैसे इलाकों में जहां पुलिस ने यदा-कदा कुछ लड़कों को दो-चार डंडे मारे भी, उसको भी लोग़ों ने ठीक ही बताया।

इस सबके बावजूद वायरल एक ऑडियो ने तमाम सोसायटी-वासियों को परेशान कर रखा है। इसमें कहा गया है, ''...मैंने अपनी प्राइवेट गाड़ी से सफ़ेद पारचात में शहर का दौरा किया तो पाया कि कुछ सोसायटियों में लोग घर से बाहर निकल कर घूम रहेहैं और बच्चे खेल रहे हैं, कुछ अपनी गाड़ियों को लेकर बाहर घूमने और कुत्तों को टहलाने निकल जाते हैं। मैंने सोसायटी के गार्डों को हुक्म दे दिया है कि वे बाहर जाने वाली गाड़ियों के नम्बर नोट करके उन्हें बताया जाये। लॉकडाउन में घर से बाहर नहीं निकलना है, घर के अंदर ही रहना है। अब पुलिस की गाड़ी सायरन बजाते नहीं आयेगी। पुलिस अचानक आयेगी और जिन लोग़ों को घर के बाहर सोसायटी में घूमता पाया जायेगा, जो व्यक्ति कानून का पालन नहीं करेगा उन्हें सीधा चालान भेजा जायेगा।''

बोलने वाला अपना परिचय नहीं दे रहा है। वह एक बड़े पुलिस अधिकारी की भांति जनता को धमका रहा है। बाहर घूमती गाड़ियों के चालान की बात तो किसी हद तक समझी जा सकती है। परन्तु सोसायटी परिसर में घूमते लोगों और बच्चों को धमकाने का औचित्य समझ से परे है। जब तमाम राजनेता व अधिकारी अपनी कोठियों के बड़े-बड़े लॉन्स में टहल सकते हैं तो सोसायटी वाले अपनी सोसायटी के लॉन में क्यों नहीं? इसे लेकर तमाम सोसायटियों में रहने वाले काफ़ी परेशान हैं।

'मज़दूर मोर्चा' ने यह आडियो एक अप्रैल को सीपी को भेज कर यह जानने का प्रयास किया कि यह आवाज़ किस की है, यानी वास्तव में ही कोई पुलिस अधिकारी बोल रहा है या कोई यूं ही जनता को धमका रहा है? लेकिन बार-बार फ़ोन करने व मैसेज के बावजूद सीपी की ओर से कोई जवाब नहीं आया।

भूल जाओ कि आरएसएस नाम का कोई संगठन भी है

नई दिल्ली। वरिष्ठ पत्रकार रविश कुमार ने मुस्लिम भाइयों से भावुक अपील की है। अपनी अपील में उन्होंने कहा कि आप लोग भाजपा और आरएसएस की आलोचना करना बंद कर दें। आपका विरोध करना ही उनकी ताकत है। वैसे भी जम्मू-कश्मीर को छोड़कर न तो तुम्हें कहीं का मुख्यमंत्री बनना है और न ही प्रधानमंत्री। जिनको सत्ता लेनी है, वो अपने आप आरएसएस, भाजपा की काट कर लेंगे।

आपके विरोध करने की वजह से ही भाजपा 18 फीसदी मुस्लिमों का भय दिखाकर 80 फीसदी हिन्दुओं का वोट अपने पाले में लाने में सफल रहती है और पूरे खेल के संचालक तो असल में 3 फीसदी ही हैं। उन्होंने कहा कि आपको जिस किसी भी पार्टी को वोट देना है दो, जिसका समर्थन करना है करो पर भूलकर भी भाजपा, आरएसएस और मोदी का विरोध मत करो।

भूल जाओ की आरएसएस नाम का कोई संगठन भी है। भूल जाओ की भाजपा कोई पार्टी है। भूल जाओ कि मोदी कोई नेता है। आपकी यही दशा रही तो कुछ साल में आप राजनीतिक तौर पर अछूत बना दिए जाओगे, फिर न तो आपको कांग्रेस पूछेगी, न भाजपा, न सपा और न बसपा। जिस मीम और ओवैसी का आप अंध समर्थन कर रहे हो उसको चुनाव में हिस्सा तभी तक लेने दिया जायेगा जब तक की भाजपा को उनके चुनाव लड़ने से फायदा हो रहा है। जिस दिन भाजपा को लगेगा कि अब इनके चुनाव लड़ने से उसे नुकसान हो रहा है उसी दिन मीम पर पाबंदी लगा दी जायेगी जैसे की पहले 30-40 साल तक पाबन्दी लगी थी। तुम केवल आधुनिक, वैज्ञानिक शिक्षा पर ध्यान दो, इतने अंक लाओ कि बिना आरक्षण के ही तुम सरकारी नौकरियां हासिल कर सको।

आजादी से पहले भारत में मुसलमानों की आबादी 35 फीसदी थी और 35 फीसदी सरकारी नौकरियों पर मुसलमानों का कब्जा था, उस समय यह आरक्षण जैसी कोई व्यवस्था भी नही थी। जो उस मुकाम तक पहुंचते थे वो अपनी काबिलियत के दम पर ही पहुंचते थे और जो आप दीनी इदारों में जकात, खैरात का पैसा देते हैं बेहतर होगा कि ऐसे इदारों में भी जकात, खैरात का पैसा दो जो आपकी शिक्षा और रोजगार के लिए काम करे। यदि ऐसे इदारे नही हैं तो बनाइये।

याद रखिये इस समय कम्पटीशन का जमाना है और आप हर क्षेत्र में पिछड़ रहे हैं, किसी भी तरह की सरकारी मदद का भरोसा छोड़ दीजिये। जो करना है आप अपने दम पर कीजिये। बाकी खुदा मालिक है।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5**
2. **प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन**
4. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे**
5. **राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने**
6. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास**
7. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**